

# म्हें तो ढूँढ्यो जग सारो था स्यूं कोई नहीं न्यारो



म्हें तो ढूँढ्यो जग सारो,  
था स्यूं कोई नहीं न्यारो,  
देख्यो थां रो ही उणियारो,  
अब तो मोर मुकुट सिर धारो होऽ गिरधर,  
धारो होऽ गिरधर,  
लुक छिप आप, कटै जास्यो।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो।bd।

---

थां नै ओळख लीन्हें आज,  
म्हां री सुण ल्यो थे आवाज,  
क्यूं छो भगतां स्यूं नाराज,  
लुकतां आवै नाही लाज,  
अब थे नैड़ा म्हां रै क्यूं नहीं आवो होऽ गिरधर,  
आवो होऽ गिरधर,  
लुक छिप आप, कटै जास्यो।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो।bd।(१)।bd।

---

ढूँढ्या धरणी अर आकास,  
थे तो बैठ्या म्हां रै पास,  
प्रभु हूं तो थां रो दास,  
थे छो माळक म्हां रा खास,  
थे तो मीठा-मीठा बैण उचारो होऽ गिरधर,  
उचारो होऽ गिरधर,  
लुक छिप आप, कटै जास्यो।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो।bd।(२)।bd।

---

थां नै समझ ले ना दूर,  
थे तो हाजर हजूर,  
थां रो छळकै है नूर,  
थां री किरपा है भरपूर,  
म्हां रै हिवडै निवास है थां रो होऽ गिरधर,  
थां रो होऽ गिरधर,  
लुक छिप आप, कटै जास्यो।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो।bd।(३)।bd।

---



म्हां पर किरपा कर दी नाथ,  
पायो प्रेमी जण रो साथ,  
म्हां रै सिर पर थां रो हाथ,  
अब तो मिलस्यां बांध ऊं बांध  
थां रो कीर्तन लागै म्हां नै प्यारो होऽ गिरधर,  
प्यारो होऽ गिरधर,  
छुक छिप आप, कटै जास्यो ।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो ।bdI(४)bdI

---

म्हें तो दूढ्यो जग सारो,  
था स्यू कोई नहीं न्यारो,  
देख्यो थां रो ही उणियारो,  
अब तो मोर मुकुट सिर धारो होऽ गिरधर,  
धारो होऽ गिरधर,  
छुक छिप आप, कटै जास्यो ।  
न्यारा म्हां नै छोड, कटै जास्यो ।bdI

प्रेषक – विवेक अग्रवाल जी ।  
९०३८२८८८१५

---